अध्याय पंचम

# शोध, सारांश, निष्कर्ष एवम् सुझाव

# अध्याय पंचम

# शोध, सारांश, निष्कर्ष एवम् सुझाव

## ५.१ प्रस्तावना

किसी भी देश का विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है इसलिए आज देश विश्व के समस्त देश शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रहे है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद ४५ में यह प्रावधान है ६ से १६ वर्ष की आयु के समस्त बालकों के लिए नि:शुल्क एवम् अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की जाए।इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रयासों के पश्चात् साक्षरता दर को बढ़ाया गया है किन्तु अभी भी बहुत अधिक बालक/बालिका शिक्षा की मुख्य धारा से नहीं जुड़ पाते है।

शिक्षा का समावेशीकरण यह बताता है कि विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक सामान्य छात्र और एक दिव्यांग छात्र के साथ विद्यालय में अधिकतर समय बिताता है। पूर्व में समावेशी शिक्षा की परिकल्पना सिर्फ विशेष छात्र के लिए की गई थी लेकिन आधुनिक काल में सभी शिक्षक को इस सिद्धांत को विस्तृत दृष्टिकोण में अपनी कक्षा में लाना चाहिए।

शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है। राष्ट्रीय तथा सामाजिक विकास में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है प्राचीनकाल से इसी कारण शिक्षक को आदरपूर्ण स्थान दिया जाता रहा है। शिक्षक समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूक होंगे तब ही विद्यार्थियों में समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता आ सकती है। इसलिए प्रस्तुत शोध अध्ययन में समावेशी शिक्षक के प्रति प्राथमिक शिक्षकों की जागरूकता और अभिवृत्ति का अध्धयन विषय को चयनित किया गया है।

इस अध्ययन में लघु शोध का सारांश एवम् चतुर्थ में दिए गए प्रदत्त के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है।

## ५.२ समस्या कथन

समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक शिक्षक की जागरूकता और अभिवृत्ति।

## ५.३ चर शोध समस्या मै निम्न चर है:

**(१) स्वतंत्र चर (२) परतंत्र चर**

**(१) स्वतंत्र चर – प्रबंधन, लिंग, प्रशिक्षण**

**(२) परतंत्र चर – अभिवृत्ति, जागरूकता**

## ५.४ अध्ययन के उद्देश्य

- विद्यालय प्रबंधन के आधार पर समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक शिक्षक की जागरूकता और अभिवृत्ति में भिन्नता का अध्ययन करना।
- लिंग के आधार पर समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक शिक्षक की जागरूकता और अभिवृत्ति में भिन्नता का अध्धयन करना।
- प्रशिक्षण के आधार पर समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक शिक्षक की जागरूकता और अभिवृत्ति में भिन्नता का अध्धयन करना।

## ५.५ परिकल्पना

- समावेशी शिक्षा के प्रति विद्यालय प्रबंधन के आधार पर प्राथमिक शिक्षकों की जागरूकता और अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।
- समावेशी शिक्षा के प्रति लिंग के आधार पर प्राथमिक शिक्षकों की जागरूकता और अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

- समावेशी शिक्षा के प्रति प्रशिक्षण के आधार पर प्राथमिक शिक्षकों की जागरूकता और अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

## ५.६ समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य मध्य प्रदेश के भोपाल शहरी विस्तार तक सीमित है।
प्रस्तुत शोध कार्य ४ शासकीय, ४ अशासकीय विद्यालय में किया गया।
प्रस्तुत शोध कार्य प्राथमिक शिक्षकों पर किया गया।

## ५.७ शोध न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोधार्थी द्वारा प्रतिदर्श का चयन के लिए शहरी विद्यालय लिए गए है। ४ शासकीय एवम् ४ अशासकीय विद्यालय लिए गए है।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोधार्थी द्वारा प्राथमिक शिक्षकों को आकस्मिक प्रकार से चयनित किया गया।

## ५.८ शोध में प्रयुक्त उपकरण

समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक शिक्षकों की जागरूकता और अभिवृत्ति की प्रतिक्रियाओं का अध्धयन करने के लिए मापनी के आधार पर शोधार्थी द्वारा जागरूकता और अभिवृत्ति मापनी को ५ प्वाइंट स्केलिंग में विकसित किया गया है।

## ५.९ प्रदत के विश्लेषण हेतु प्रयोक्ता सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा समावेशी शिक्षा के प्रति विद्यालय प्रबंधन, लिंग तथा प्रशिक्षण के आधार पर प्राथमिक शिक्षकों की जागरूकता और अभिवृत्ति भिन्नता का अध्धयन करने के लिए काई वर्ग सांख्यिकी तकनीक का प्रयोग किया गया।

शोधार्थी द्वारा समावेशी शिक्षा के प्रति विद्यालय प्रबंधन, लिंग तथा प्रशिक्षण के आधार पर प्राथमिक शिक्षकों की सकारात्मक जागरूकता और अभिवृत्ति में भिन्नता का अध्धयन करना के लिए प्रयोग किया गया है। शोधार्थी द्वारा समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक शिक्षा की जागरूकता और अभिवृत्ति में अध्धयन का किया गया।

## ५.१० अध्धयन के मुख्य परिणाम

- समावेशी शिक्षा के प्रति विद्यालय प्रबंधन आधार पर शिक्षकों की जागरूकता और अभिवृत्ति में अंतर नहीं है।
- समावेशी शिक्षा के प्रति लिंग के आधार पर प्राथमिक शिक्षकों की जागरूकता और अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।
- समावेशी शिक्षा के प्रति प्रशिक्षण अनुभव के आधार पर प्राथमिक शिक्षक की जागरूकता और अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

## ५.११ निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए :

१. समावेशी शिक्षा के प्रति विद्यालय प्रबंधन के आधार पर प्राथमिक शिक्षक की जागरूकता और अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अर्थात् समावेशी शिक्षा के प्रति विद्यालय के प्राथमिक शिक्षक की जागरूकता और अभिवृत्ति का अशासकीय विद्यालय/शासकीय विद्यालय में कार्यरत होने में कोई अंतर नहीं है।
२. समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक विद्यालय के प्राथमिक शिक्षक की समावेशी जागरूकता और अभिवृत्ति में लिंग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अर्थात् समावेशी शिक्षा के प्रति शासकीय विद्यालय के प्राथमिक शिक्षक की समावेशी जागरूकता और अभिवृत्ति में महिला शिक्षक या पुरुष शिक्षक होने पर कोई अंतर नहीं है।

३. समावेशी शिक्षा के प्रति प्रशिक्षण के आधार पर प्राथमिक शिक्षक की जागरूकता और अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया।

अर्थात् समावेशी शिक्षा के प्रति प्रशिक्षित या अप्रशिक्षित होने के आधार पर शिक्षक की जागरूकता और अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। वे शिक्षक जो प्रशिक्षित होते है वे सभी समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूक होते है।

## ५.१२ भावी शोध हेतु प्रस्तावित समस्याएं

अध्ययन के लिए ली जा सकती है क्योंकि भारत में समेकित शिक्षा को उचित स्थान नहीं मिल पाया है।

इस दिशा में शोधार्थी के अनुसार भावी शोध हेतु महत्वपूर्ण समस्याएं इस प्रकार है:

१. समावेश शिक्षा के प्रति छात्र की जागरूकता एवम् अभिवृत्तियों का अध्ययन।

२. ग्रामीण क्षेत्रों में समावेशी शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन।

३. विद्यालय में समावेशी शिक्षा की आवश्यकता एवम् प्रमुख चुनौतियां।

४. नगर के ग्रामीण क्षेत्रों में समेकित शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन।

५. समावेशी शिक्षा का विद्यार्थी के शैक्षणिक स्तर पर प्रभाव।

६. ग्रामीण क्षेत्रों में समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक शिक्षक की अभिवृत्ति।

७. समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक शिक्षकों की नवीनता का अध्धयन।

८. समावेशी शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति एवम् जागरूकता का अध्ययन।